कुलगीत

कला-संस्कृति, सर्वज्ञान की,
बहे जहां विघा-धारा।
प्रथम केन्द्रीय विश्वविघालय,
स्थापित बिहार में न्यारा।।

सतत ज्ञान-विज्ञान की सीमा,
का सम्बर्धन लक्ष्य हमारा।
जिससे हो मानव विकास नित,
समता का समाज हो प्यारा।।

बने विचारों के विमर्श की,
सदा स्थली विश्विघालय।
मानवीय मूल्यों-संबंधों,
के सर्जन को सदा संवारा।।

अक्षुण्ण रखते हुए प्रकृति को,
मानव विकास ऊंचाई पाये।
निर्धनता किसी को न रोके
निष्ठा सत्य लक्ष्य चमकाये ।।

अपनी मेहनत अदभुत सपना,
राह गगन में नई बनायें।
पारदर्शिता से हम इसको,
धरती पर पहचान दिलायें ।।

सर्वधर्म की भूमि यहीं पर,
जिसने जीवन-मूल्य निखारा ।
नव जागरण ज्ञान की गरिमा,
बढ़े शोध-संस्कृति क्रम न्यारा ।।

रचयिता - डॉ. हरिप्रसाद दुबे